हलाल और हराम की तमीज़ न रहेंगी

हज़रत मुफ्ती अहमद खानपुरी दब.

महमुदुल मवाइज़ उर्दु से रिवायत का खुलासा लिप्यान्तर किया गया है.

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहिम

रेशम पेहना जायेगा: लिबास मे हलाल और हराम की तमीज़ न रहे जिन चीझो को पहेनना हराम करार दिया है उसको भी आदमी इस्तेमाल कर रहा है और शराब पी जाये यानी खाने पीने के मामले मे भी हलाल और हराम की तमीज़ न रहे.

आज कल बडे बडे रेस्टोरन्ट बन्ते जा रहे है और लोग धूम से वहा जा रहे है और खा रहे है वहा किया खिलाया जा रहा है वो कोई नही देखता शौक से वहा जा रहे है बस सिर्फ नुमाइश मकसूद है अपने पैसो को हराम तरीका से खर्च कर रहे है अगर हलाल जगा भी खर्च करे तो उसमे भी शरीयत की तरफ से ये जूठ नही है के आदमी नुमाइश के तौर पर उसको खर्च करे लोग यू समझते है के फला रेस्टोरन्ट मे जाकर खायेन्गे तो उससे हमारा एक मकाम बनेगा और वहा

हराम खिलाया जा रहा है उसकी कोई तहकीक नही करता.

मरदो का रेशमी लिबास पेहनना भी आज़्माइशे की दावत देनेवाला है: रेशम पेहना जायेगा रेशमी लिबास को मरदो के लिये हराम करार दिया गया है सोने चांदी के ज़ेवरात और रेशमी लिबास औरतो के लिये जाइज़ है मरदो के लिये हराम है औरतो के लिये भी सोने चांदी के ज़ेवरात की इजाज़त है सोने चांदी की और चीझे मसलन पीयाला थाली वगैरा उनका इस्तेमाल न मरदो के लिये जाइज़ है और न औरतो के लिये जाइज़ है. तो रसूलुल्लाहﷺ फरमाते है के रेशम जो मरदो के लिये हराम करार दिया गया है लोग उसको पहेन्ने लगेन्गे.

बनावती रेशम पहेन सकते है: बुखारी शरीफ की रिवायत मे है के मेरी उम्मत मेसे कुछ लोग ज़िना को और रेशम को और शराब को हलाल समझने लगेन्गे तो उस वकत अल्लाह तआला की तरफ से उनको मस्खकर दिया जायेगा तो बहरहाल रेशम का इस्तेमाल मरदो के लिये हराम है लेकिन

अगर वो इस्तेमाल होने लगे तो वो उसी वइद मे दाखिल है आज कल एक बनावती रेशम आता है उसको आरटीफीशल रेशम कहा जाता है वो चूके हकीकी रेशम नही है इसलीये उसकी गुन्ज़ाइश है लेकिन उससे भी बचने का ऍहतेमाम करना बेहतर है. तो इससे पता चला के तकवा वाला लिबास पेहनना चाहिये तकब्बूर और फखराना लिबास से बचना चाहिये. अल्लाह हम सब को अमल की तौफीक अता फरमाये.